ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592640

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

भारतीय धर्म और संस्कृति में कला का अन्तःसम्बन्ध

डॉ0 इन्दु जोशी [1], जितेन्द्र कुमार चौधरी [2]
[1] विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग, चित्रकला विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा
[2] शोध-छात्र, चित्रकला विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा

शोध-सारांश
एशिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अवलोकन करने पर व्यक्ति, समाज, धर्म, संस्कृति और कला की बेआवाज एक-दूसरे में महत्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगत होता है। जिस इतिहास में धर्म, संस्कृति और कला का महत्व नही है तो वह कोरा इतिहास होकर रह जाता है।

मुख्य शब्द – भारतीय धर्म, अन्तःसम्बन्ध, संस्कृति

Cite This Article: जितेन्द्र कुमार चौधरी, डॉ0 इन्दु जोशी. (2019). "भारतीय धर्म और संस्कृति में कला का अन्तःसम्बन्ध." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 265-267. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592640.

भारतीय इतिहास कलात्मक, सौन्दर्यता, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, धर्मपरकता, पुरातनता व संस्कृति के मौलिक सूत्रों में घिरी एक मुक्ता-माला के समान है। इनमें कला का विकसित व आदर्श स्वरूप है और यह कला, किसी भी समय व स्थान पर, जब किसी सभ्यता का अभ्युदय एवं विकास हुआ है तो सभ्यता के मूल तत्वों को सुदृढ़ किया है। जिसमें धर्म, संस्कृति और कला का आपस में परस्पर सम्बन्ध स्थापित करता है। कला, मनुष्य को संवेदनशील व विवेकशील, संस्कृति से सभ्य, धर्म से आस्थावान बनाती है। यह विभिन्न स्वरूप मनुष्य को ऊर्जावान और जुझारूपन बनाते है। जिससे समस्याओं का मुकाबला करने का सहज स्वाभिमान को जागृत करते है। जिससे विश्व में मानवता का प्रसार हो।

ये पूर्णरूप से स्पष्ट है कि कला ने ही मानव का संस्कार किया है। उसे पशु वृत्ति से पृथक किया तथा उसे सौन्दर्य बोध दिया। जिसके कारण मनुष्य ने इस सुन्दर जगत का निर्माण किया। मनुष्य जो कुछ करता है, वह कला ही उपासना के अज्ञान उत्पादन है। जो परम्परा से विकसित होते चले आये है। कला के विभिन्न रूप और प्रकार, जहाँ भी दृष्टिपात किया तो हमें देखने को मिलता है[1] और यह मनोविनोद या भोग-विलास न होकर कलात्मक विस्तार, ऐतिहासिक परम्परा का आदर्श और सैद्धान्तिक सृजन की प्रक्रिया का प्राधान्य माना गया। जो अभिव्यक्ति के माध्यम से जन-जन में संचारित और संसार में प्रकाशित होता है। जो मानव के पथप्रदर्शक के साथ ही सभ्य बनाने की निरन्तर प्रक्रिया में रहती है। इस निरन्तरता में मानव स्वयं और समूह में ध्यान, चिन्तन-मनन, सृजन आदि के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करके आनन्दिक सुख प्राप्त करता है। इस सुख प्राप्ती में कला प्रमुख साधन सिद्ध होता है। जो भारतीय इतिहास में मानव जीवन के

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592640

प्रत्येक पक्ष के प्रतिबिम्ब को दर्शाता है। इन्हीं के द्वारा ही भारतीय धर्म और संस्कृति प्रभावित करता है। जिससे इनका कला के अन्तःसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

धर्म-

कला का क्षेत्र व्यापक है। जब मानव सभ्यता का उदय होता है तो समाज का निर्माण होता है। जिसके अनेक अंग होते है। जिसमें धर्म भी एक महत्वपूर्ण अंग है। जिनका पालन कर मानव अपना जीवन निर्वाह करता है। धर्म शब्द का उद्‌भव 'धृ' धातु से हुआ है। जिसका अर्थ है 'धारण करना'। इस परम सत्ता से जुड़ी रीति-रिवाज, परम्परा, पूजा पद्धति और दर्शन का समूह, धर्म के अन्तर्गत आता है।[2]

आदिकाल में मनुष्य, जीवन जीने के लिए संघर्ष करता रहा और इन्ही संघर्द्गाशील जीवन में कई ऐसी घटनायें घटती थी, जिससें वे भयभीत होते थे। वे वर्षा, तूफान, ज्वालामुखी व प्राकृतिक आपदाओं से अत्याधिक डरे हुए थे। उन्होनें इसे समझने का प्रयास किया और उनके सामने नतमस्तक हुए तथा अपने आप को समर्पण करना आरम्भ किया। जो धर्म के उत्थान व विकास में सहयोग प्रदान किया और कालक्रमानुसार धर्म का नित्य विकास हुआ। जिसमें मानव ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, अग्नि, वृक्ष, जीव-जन्तु, स्वास्तिक आदि प्रतिकों के माध्यम से अंकन आरम्भ किया और निरन्तर विकास के फलस्वरूप, अपनी आस्थावान प्रवृत्ति और उपासना हेतु देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षणियों, गण, गन्धर्व, देवदूतों आदि के साकार रूप में अंकन हुआ जो हमें चित्रकला और मूर्तिकला में दृष्टिपात होते है।

कला और धर्म, प्रागैतिहासिक काल से ही जीवन की विस्तृत व्याखया करते रहें है। यदि कला ने धर्म की सहायता की है तो धर्म ने भी कलाओं को सर्वाधिक सशक्त प्रेरणा दी है। जिससे दोनों का आपस में अन्तःसम्बन्ध स्थापित हुआ। कला के द्वारा ही धार्मिक विचारों में कलात्मक विविधता, प्रभावशीलता, आकर्द्गाण एवं सौन्दर्यता विकसित हुआ और ये विशेषतायें ही सदैव धर्म की संगिनी, सहायक और प्रतिपादक बनी।

संस्कृति-

संस्कृति का भी भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृति एक ऐसी धारा है जो निरन्तर और अविरल प्रवाहित होती है। यह जल पर पड़ने वाले किरणों से बिखेरती रोशनी की भाँति है, जो सर्वदा उज्जवलित रहती है।

संस्कृति द्राब्द 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'करना' है। अंग्रेजी में 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है। जिसका अर्थ है, 'विकसित या परिष्कृत करना' और 'पूजा करना' या संस्कृति का शब्दार्थ है 'उत्तम या सुधरी हुई स्थिति'। मानव जीवन का वह क्षेत्र जिसे हम संस्कारित करते है, विकसित करते है और एक समय के पश्चात वह हमारी परम्परा और सभ्यता का रूप धारण करती है।[3] मानव एक प्रगतिशील प्राणी है और प्रगतिशील बने रहने के लिए स्वाभाविक रूप से वह अपने सामाजिक परिस्थितियों में सुधार करता है। जीवन पर्यन्त आचार-विचार, रहन-सहन, रिति-रिवाज और परम्परा आदि में निरन्तर प्रगति करता है। उसे उन्नत करके उत्तम रूप प्रदान करने का प्रयास करता है। इसी प्रयास में मनुष्य की जिज्ञासायें बढ़ी। जिसके कारण इन्द्रिय आनन्द और सुख प्राप्ति हेतु कला की ओर बढ़ा और उसे उन्नत, उत्तम और आदर्श रूप प्रदान किया।

इनके द्वारा मनुष्य सदा संस्कारित हुआ और वह पशु जीवन से निकल कर मानव जीवन में प्रवेश किया, जिससे सौन्दर्य का बोध हुआ और सौन्दर्यात्मक संसार का सृजन करने लगा। जो सिन्धु घाटी की सभ्यता,

मेसोपोटामिया की सभ्यता, मिस्र की सभ्यता आदि में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस सभ्यता में विशाल नगर, भवन, कलाकृतियाँ आदि है। इन्ही सौन्दर्यात्मक प्रतिकों के माध्यम से मनुष्य क्रमगत संस्कृति का ज्ञान होता है। जैसे कोणार्क मन्दिर से हिन्दू, ताजमहल से इस्लाम, अजन्ता से बौद्ध व स्वर्ण मन्दिर से सिक्ख धर्म आदि की संस्कृति का ज्ञान होता है और उनके प्रतिक देखने को मिलते है।

प्रत्येक कालखण्ड में मानव जाति ने अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रतिक चिन्हों के छाप, कला रूप में छोड़े है और आगे भी मानव, अपने संस्कृति का पदचिन्ह, कला विरासत के रूप में सौप कर जायेगा। इससे स्पष्ट होता है कि मानव जीवन के प्रगति का मूल स्रोत कला है और कला संस्कृति के उन्नति का आधार है और यह दोनों ही मानव को मार्गदर्शन का कार्य और जीवन का सुखमय बनाने का कार्य सम्पन्न करेंगी। जिसके द्वारा समाज को नई दिशा और नवीनता से परिचय कराती रहेगी।

निष्कर्ष-

कला मानव सभ्यता का एक अभिन्न अंग है। जिससे उसकी सभ्यता का इतिहास झलकती है। मानव अपने जीवन काल में घटित घटनाओं व अनुभवों के छवि अपने मन-मस्तिष्क में स्मरण रखता है। वह कलाकृतियों, भाषा व परम्परा के द्वारा संसार के समक्ष प्रस्तुत करता है। जिससे उसके संस्कृति और सभ्यता का प्रतिबिम्ब दिखाई देती है और यही प्रतिबिम्ब उस देश की धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा कलात्मक उपलब्धियों का प्रतिक है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय धर्म और संस्कृति में कला का घनिष्ट अन्तःसम्बन्ध है और सदैव स्थापित रहेगा।

सन्दर्भ

[1] राम गोपाल विजयवर्गीय, संस्कृति और कला, कला दीर्घा, लखनऊ, 2001.
[2] www.shivji.in>sanatan>dharm
[3] https://hi.m.wikipedia.org>wiki
[4] डॉ0 सविता वर्मा, श्री पी0 एन0 चोयल की कला का शैलिगत स्वरूप, शोधनिधि, इन्दौर (मध्य प्रदेश), 2012.
[5] प्रो0 एस0 बी0 एल0 सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2010.
[6] डॉ0 अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2007.
[7] राम गोपाल विजयवर्गीय, संस्कृति और कला, कला दीर्घा, लखनऊ, 2001.
[8] आर0 ए0 अग्रवाल, भारतीय चित्रकला का विवेचना, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 2005.

*Corresponding author.
E-mail address: jitendrakumarchaudhari1988@ gmail.com